>

Title: Regarding problems faced by stake holders under the Public Distribtuion System in the country.

श्री राधे मोहन सिंह (ग़ाज़ीपुर): माननीय सभापति जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने एक अति महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया। भारत सरकार के सार्वजनिक वितरण प्रणाली की अंतिम कड़ी कोटेदार है, जिसे वितरक कहा जाता है। मैं उसी वितरक की समस्याओं, उनकी कठिनाइयों और उनके प्रति अन्याय को सदन में रखना चाहता हूं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत अंत्योदय बीपीएल गरीबी की रेखा के नीचे एपीएल और एडीएम मिड डे मील का राशन एवं केरोसिन तेल का वितरण इन्हीं कोटेदारों के माध्यम से किया जाता है। जिसके अनुसार राशन में कोटेदार को छः रुपये से लेकर 12 रुपये प्रति कुंतल कमीशन मिलता है। जबकि मिट्टी के तेल में मात्र 53 पैसे प्रति लीटर कमीशन मिलता है तथा मिड डे मील में 12 रुपये प्रति कुंतल की दर उन्हें कमीशन मिलता है। लेकिन आश्चर्य यह है कि उन्हें ब्लाक मुख्यालयों से जो भाडा दिया जाता है, वह छः रुपये प्रति कुंतल की दर से दिया जाता है। वह माल ब्लाक मुख्यालय से कोटेदार अपनी दुकानों तक ले जाता है। लेकिन उसे मात्र छः रुपये से लेकर 12 रुपये तक का भाड़ा दिया जाता है। जबकि सत्य यह है कि माल ढुलाई में वह जो माल अपनी दुकानों तक ले जाता है, उसे उसका भुगतान 25 रुपये प्रति कुंतल की दर से करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में यह आश्चर्य का विषय है कि एक तरफ अंत्योदय में और एक तरफ एपीएल और बीपीएल में और यहां तक कि केरोसिन के तेल में महज 53 पैसे उसे भाड़े के रूप में मिलते हैं...

सभापति महोदय : आप अपनी मांग रखिये, जो आपकी अपेक्षा है।

श्री राधे मोहन सिंह : महोदय, मैं अपनी मांग ही रख रहा हूं। इन परिस्थितियों में जहां कोटेदार को भाड़े में छः से लेकर 12 रुपये तक प्रति कुंतल मिलते हैं, वहां दूसरी तरफ प्रति कुंतल ढुलाई में उसे 13 से लेकर 19 रुपये तक का नुकसान होता है। इन परिस्थितियों में कोटेदार अपने को साफ-सुथरा कैसे रख सकता है।

इसके साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जो बाकी उसके पास बचता हैं, उसमें बीएससी से लेकर कालाबाजारी के लिए इंस्पैक्टर्स और तमाम तरह के अधिकारी उसका शोषण करते हैं। मैं आपके माध्यम से सरकार की जानकारी में लाना चाहता हूं कि आज रामलीला मैदान में देश भर के कोटेदार अपनी मांगों को लेकर जुटे हुए हैं।

सभापति महोदय : आप अपनी मांग रखिये।

श्री राधे मोहन सिंह : हमारी भारत सरकार की वितरण प्रणाली में सबसे सशक्त और सबसे मजबूत कड़ी वितरक की है। ...(व्यवधान)

सभापति महोदय : कृपया टोका-टाकी न करें।

श्री राधे मोहन सिंह : महोदय, जहां तक मिड डे मील का सवाल है, 1998 के बाद मिड डे मील का जो भाड़ा है,

सभापति महोदय : मिड डे मील अलग टॉपिक है, आप जो पीडीएस की बात कर रहे हैं, उसकी बात करिये। आप दो टॉपिक नहीं, एक टॉपिक की बात रखिये।

श्री राधे मोहन सिंह : मिड डे मील वही होता है, वहां मिड डे मील का जो राशन जाता है, उसका भी भाड़ा उन्हें नहीं मिलता है।

सभापति महोदय : इसमें डिस्ट्रीब्यूशन के बारे में आया है।

श्री राधे मोहन सिंह : हां, इसमे डिस्ट्रीब्यूशन का आया है। उन्हें वह भाड़ा भी नहीं दिया जाता है।

मैं सरकार से मांग करता हूं कि उनकी प्रतिष्ठा के लिए, उनकी रोजी-रोटी के लिए, उनके व्यवसाय के लिए, उनके प्रतिष्ठान के लिए उन्हें भी महीना दिया जाए, जैसे अन्य प्रावधानों में दिया जाता है। मैं मांग करता हूं कि कोटेदारों के भाड़े को बढ़ाया जाए और मानदेय के रूप में उन्हें यह दिया जाए।

सभापति महोदय : श्रीमती जयश्रीबेन पटेल, आप बोलिये।

श्री दत्ता मेघे (वर्धा): महोदय, मैं इनके विषय के साथ अपने आपको एसोसिएट करता हूं।

सभापति महोदय : आप स्लिप भेज दीजिए।

श्रीमती रमा देवी को उपरोक्त विषय के साथ सम्बद्ध किया जाता है।